News

इन कामों के लिए याद आता है संघ

दादर-नगर हवेली की मुक्ति

आजादी के बाद भी दादर नगर हवेली फ्रांसीसियों के कब्जे में था,जो संघ को अखरता था। 2 अगस्त 1954 को 500 से ज्यादा हथियारबंद स्वयंसेवको ने यहां धावा बोल दिया। फ्रांसीसी शासक घबरा गए वे बिना संघर्ष के ही यहां से हट गए और स्वयंसेवकों ने तिरंगा फहरा दिया।

कश्मीर आक्रमण

3 सितबर 1947 को कश्मीर में पाकिस्तान ने घुसपैठ शुरू की। अनेक स्थानों पर संघ के स्वयंसेवकों ने डटकर मुकाबला किया। जम्मू का हवाई अडडा इतना बड़ा नहीं था कि उस पर सेना के हवाई जहाज आसानी से उतर सकें। संघ के स्वयंसेवकों ने रात दिन मेहनत करके हवाई अड्डे का विस्तार किया और उसे भारतीय सेना के बडे जहाज उतरने लायक बनाया।

गोवा मुक्ति आंदोलन

1955 नवम्बर में संघ के एक शिक्षक स्वयंसेवक को पुर्तगाली पुलिस ने गोवा के सचिवालय पर तिरंगा फहराने के आरोप में गिरफ्तार कर लिया। संघ के जबरदस्त आंदोलन और दबाव के चलते केन्द्र सरकार ने भी विवश होकर पुलिस कार्यवाही की जिसके फलस्वरूप 1961 मे गोवा मुक्त हो सका।

चीन आक्रमण

1962 मे चीन के आक्रमण के समय भारतीय सैनिकों के लिए संघ के स्वयंसेवकों ने सभी प्रकार की सामग्री मुहैया कराने मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। घायल सैनिकों के लिए खून की व्यवस्था की। साथ ही पूरे देश मे जनसामान्य का मनोबल बढाने में संघ सक्रिय रहा। 26 जनवरी की परेड़ में स्वयंसेवकों को विशेष रूप से आमंत्रित किया गया।

दैनिक भास्कर

डॉ. अमित राय जैन नियुक्त किए गए सरस्वती नदी परियोजना के सलाहकार

भास्कर न्यूज

बड़ौत। प्रतिष्ठित इतिहासकार डॉ. अमित राय जैन को भारत सरकार की सरस्वती नदी परियोजन की सलाहकार परिषद में सदस्य नियुक्त किया गया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के ड्रीम प्रोजेक्ट सरस्वती नदी के बहूविध अध्ययन हेतु सलाहकार समिति के अध्यक्ष केंद्रीय संस्कृति मंत्री प्रहलाद पटेल होंगे, जिसमें नामित सदस्य के रूप में डॉ अमित राय केंद्र सरकार को सरस्वती नदी के पुनरुद्धार, सरस्वती सभ्यता के पुरास्थलों का सर्वेक्षण, शोध, उत्खनन आदि विषयों पर अपनी महत्वपूर्ण सलाह देंगे। जिनका कार्यकाल मार्च 2023 तक रहेगा। शहजाद राय शोध संस्थान बड़ौत के निदेशक डॉ अमित राय जैन को इस बाबत अधिकारिक सूचना भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय द्वारा भारत का राजपत्र (असाधारण श्रेणी) के अंतर्गत संख्या 1052 को जारी कर ई-मेल द्वारा दी गई। डॉ. अमित राय जैन के भारत सरकार का सलाहकार नियुक्त किए जाने की सूचना मिलने पर उनके सभी इतिहासकार मित्रों एवं जैन समाज के वरिष्ठ पदाधिकारियों में हर्ष की लहर दौड़ गई। गौरतलब है कि डॉ अमित राय जैन इससे पूर्व दर्जनों समितियों देश एवं प्रदेश स्तरीय सरकारी समितियों में सदस्य या सचिव के रूप में अपनी सेवाएं कई दशकों से देते आ रहे हैं। उसी श्रंखला में भारत सरकार की बहुउद्देशीय परियोजना की कार्यसमिति में सलाहकार सदस्य के रूप में उनकी नियुक्ति उत्तर प्रदेश राज्य के लिए गौरव एवं गर्व की बात है। केंद्रीय संस्कृति मंत्री प्रहलाद पटेल की अध्यक्षता में गठित इस समिति में संस्कृति सचिव, पर्यटन मंत्रालय सचिव, महानिदेशक-भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, संयुक्त सचिव- संस्कृति, जल संस्कृति मंत्रालय सचिव, अंतरिक्ष विभाग इसरो के निदेशक, ओएनजीसी के निदेशक, पर्यावरण और वन मंत्रालय सचिव, आवास एवं संस्कृति मंत्रालय सचिव, हरियाणा राजस्थान एवं गुजरात सरकार के प्रतिनिधि सरकारी प्रतिनिधि के रूप में सदस्य बनाए गए हैं। डॉ. बीआर मणि, डॉ वसंत शिंदे, डॉ. बालमुकुंद पांडे, डॉ. के के मोहम्मद, डॉक्टर केएन दीक्षित, डॉ. संजय मंजुल आदि को भी सदस्य के रूप में मनोनीत किया गया है।

जल संरक्षण खुर्जा क्षेत्र के गांव नंगला मोहिद्दीनपुर में सूखे तालाबों को संरक्षित करने की चलाई मुहिम

पांच युवाओं ने जीवित कर दिए तीन तालाब

स्वतंत्रता के सारथी जल प्रहरी

राजू मलिक • बुलंदशहर

कृषि प्रधान जिले में तेजी से जल स्तर गिरता जा रहा है, इसकी चिंता आने वाली पीढ़ी को भी है। शिक्षित युवा पीढ़ी जानती है कि जल नहीं तो कल नहीं। इसी चिंता से मुक्त होने को युवकों के एक दल ने अपने गांव के तीन तालाबों की सफाई कर डाली। सूखे तालाबों में जमी गंदगी को फावड़े से साफ कर दिया। तालाब में जमी झाड़ियों को उखाड़कर इनमें बारिश और रजवाहे का पानी भर दिया। इन युवाओं की जल संरक्षण को लेकर जंग जारी है।

खुर्जा क्षेत्र के गांव नंगला मोहिद्दीनपुर निवासी अनुज राजपूत काफी समय से जनसेवा कार्य से जुड़े हैं। नेहरू युवा संगठन से अनुज राजपूत के साथ युवाओं का एक दल जुड़ा है जो सरकारी योजनाओं के लाभ वंचित वर्ग और पात्रों को दिलाने के लिए काम करता है। युवाओं के इस दल ने जल संरक्षण के लिए काम करने का संकल्प लिया और गांव के सूखे तालाबों में पानी भरने की ठान ली।

नंगला मोहिउद्दीनपुर गांव में सूखे तालाबों की सफाई करता युवाओं का दल • जागरण

युवाओं के दल ने एसडीएम से ली अनुमति

तीनों तालाबों की सूरत बदलने के लिए युवाओं का यह दल एसडीएम खुर्जा से मिला और अनुमति ली। इसके बाद इन्होंने कार्य शुरू किया तो ग्रामीणों ने भी इस दल के कार्य की सराहना करते हुए हाथ बटाया। इस दल में सुनील सिंह, मोहित चौहान, प्रिंस, सोनू और रोहित आदि शामिल हैं।

तालाब से जोड़ी गांव की नालियां

सबसे पहले युवाओं ने श्रमदान कर तालाबों में जमी गंदगी को साफ किया। इसके बाद गांव की नालियों को साफ कर उसे तालाबों से जोड़ा। इसके साथ ही टुल्लू पंप के माध्यम से रजवाहे से तालाब में पानी भरा गया। करीब 14 दिनों की इस मुहिम से गांव का तालाब फिर से जल से लबालब है। इसके बाद युवाओं ने तीन तालाबों को फिर से जीवित कर जल संरक्षित किया जाएगा।

अनुज राजपूत •

जल संरक्षण के लिए आज का युवा काफी सचेत है। धीरे-धीरे बदलाव आने लगा है। अब गांव के युवा भी तालाबों को महत्व समझने लगे हैं। धरातल से गायब हो रहे तालाबों के संरक्षण और उन्हें जीवित करने की मुहिम आगे भी जारी रहेगी।

अनुज राजपूत

अवैध धर्मांतरण

- प्रिया-कशिश और एकता हत्याकांड को कानून के ड्राफ्ट में शामिल किया गया
- मेघालय की युवती से रेप की दर्दनाक दास्तां भी बनी अध्यादेश का हिस्सा
- 'हिन्दुस्तान' ने प्रमुखता से उठाए थे तीनों मामले, सभी जघन्य श्रेणी में रखे गए

अध्यादेश : मेरठ के तीन जघन्य मामले बने नजीर

हिन्दुस्तान
एक्सक्लूसिव

मेरठ | सचिन गुप्ता

उत्तर प्रदेश में गैरकानूनी धर्मांतरण के खिलाफ तैयार अध्यादेश में मेरठ के तीन मामले नजीर साबित हुए। प्रस्तावित कानून के ड्राफ्ट में प्रिया-कशिश और एकता हत्याकांड के अलावा मेघालय की युवती से रेप की दास्तां लिखी गई है। कानपुर के भी 13 केस ड्राफ्ट में शामिल हैं। मेरठ के मामलों को अत्यंत जघन्य श्रेणी में रखा गया है।

मेरठ के एसएसपी अजय साहनी ने आपके प्रिय समाचार पत्र 'हिन्दुस्तान' को बताया कि करीब दो महीने पहले प्रदेश के एडीजी (कानून व्यवस्था) प्रशांत कुमार ने तीनों मामलों से जुड़ा ब्योरा मांगा था। तीनों प्रकरणों का पूरा घटनाक्रम बनाकर भेजा गया। एसएसपी के मुताबिक, तब गैरकानूनी धर्मांतरण कानून पाइपलाइन में था। कानून क्यों बनाया जाए, उसके लिए ऐसे मामले नजीर के रूप में पेश किए जाने थे। मेरठ के तीन मामले इसमें शामिल हुए।

01 प्रिया-कशिश हत्याकांड

गाजियाबाद में लोनी निवासी प्रिया की वर्ष 2013 में अमित गुर्जर नामक युवक से फेसबुक पर दोस्ती हुई। प्रिया अपनी मासूम बेटी कशिश को लेकर मेरठ आ गई। 2018 में प्रिया को पता चला कि लिव इन में रह रहा उसका प्रेमी अमित नहीं, शमशाद है। 28 मार्च 2020 को मां-बेटी अचानक लापता हो गईं। आपके प्रिय अखबार 'हिन्दुस्तान' ने इस मुद्दे को प्रमुखता से उठाया तो पुलिस हरकत में आई। 22 जुलाई 2020 को परतापुर थाना पुलिस ने शमशाद को उठा लिया। पूछताछ की तो उसने दोनों की हत्या का जुर्म कुबूल लिया। भूड़ बराल गांव स्थित शमशाद के घर के बेडरूम में फर्श उखाड़ी गई तो दोनों की लाश दबी हुई मिली। शमशाद समेत चार आरोपी फिलहाल जेल में हैं। चार्जशीट दाखिल हो चुकी है।

मामला 28 मार्च 2020 | **कार्रवाई** 04 गिरफ्तार

02 एकता हत्याकांड

दौराला थाना क्षेत्र के लोईया गांव के खेत में 14 जून 2019 को लुधियाना की बीकॉम छात्रा एकता देशवाल की लाश कई टुकड़ों में दबी मिली। ठीक एक साल बाद यानि दो जून 2020 को मेरठ पुलिस ने एकता के प्रेमी शाकेब और उसके पांच परिजनों को गिरफ्तार कर लिया। खुलासा हुआ कि लुधियाना में शाकेब ने अमन बनकर बीकॉम की छात्रा एकता को प्रेमजाल में फंसाया। छात्रा उसके झांसे में आकर 25 लाख रुपये की ज्वैलरी लेकर मेरठ आ गई। यहां ईद वाले दिन एकता को उसके शाकेब होने का पता चला। लड़ाई बढ़ी तो शाकेब और परिजनों ने मिलकर एकता की हत्या की, फिर लाश खेत में गाड़ दी। इस मामले में भी चार्जशीट दाखिल हो चुकी है।

मामला 14 जून 2020 | **कार्रवाई** चार्जशीट दाखिल

03 दोस्ती, बंधक और रेप

अन्य दो घटनाओं की तरह ही, नाम और धर्म छिपाकर मेघालय की लड़की के साथ भी छल किया गया। 26 अगस्त 2020 को मेरठ पुलिस को खबर मिली कि मेघालय की एक लड़की को खैरनगर में बंधक बनाकर रखा गया है। सूचना के आधार पर मौके पर पहुंची पुलिस ने घर पर छापा मारकर लड़की को बरामद कर लिया। साथ ही, अभियुक्त अदनान को गिरफ्तार किया। पुलिस के अनुसार, लड़की दिल्ली में मौसी के घर रह रही थी। अदनान भी वहां नौकरी करता था। नाम और धर्म छिपाकर उसने लड़की से दोस्ती की। मेरठ लाकर बंधक बनाकर रखा। नशे की गोलियां देकर दुष्कर्म करता रहा। इस मामले में शिलांग व मेरठ में मुकदमा दर्ज हुआ था।

मामला 26 अगस्त 20 | **कार्रवाई** आरोपी गिरफ्तार

हिन्दुस्तान ने प्रमुखता से उठाए मामले

इन तीनों मामलों को आपके प्रिय अखबार 'हिन्दुस्तान' ने प्रमुखता से प्रकाशित किया था। इसके बाद पूरे प्रदेश में हलचल मची थी। 28 मार्च 2020 को प्रिया और बेटी कशिश की शमशाद उर्फ अमित गुर्जर ने हत्या कर लाश बेडरूम में दफना दी थी। 13 जून 2019 को लुधियाना की बीकॉम स्टूडेंट एकता देशवाल को शाकेब उर्फ अमन ने मारकर खेत में दबा दिया था। 26 अगस्त 2020 को दौराला गेट क्षेत्र में मेघालय की लड़की को बंधक बना रेप करने का मामला आया था।

कानपुर के भी 13 केस शामिल

गैरकानूनी धर्मांतरण पर पर बने कानून के ड्राफ्ट में कानपुर के भी 13 केस रखे गए हैं। डीआईजी मोहित अग्रवाल ने एसआईटी बनाकर ऐसे प्रकरणों की जांच कराई थी। छह मामलों में चार्जशीट लग चुकी है। दो मामलों में फाइनल रिपोर्ट लगाई गई है। जबकि अन्य मामलों में विवेचना जारी है।

MEDIA ARTICLES

Raman Kant Tyagi, invited as Key Note Speaker at Uttarakhand Youth Summit

On World Water Day, Indian Express's online portal EdexLive published a story on NEER Foundation's efforts for revival of rivers of his region. 16 March 2020

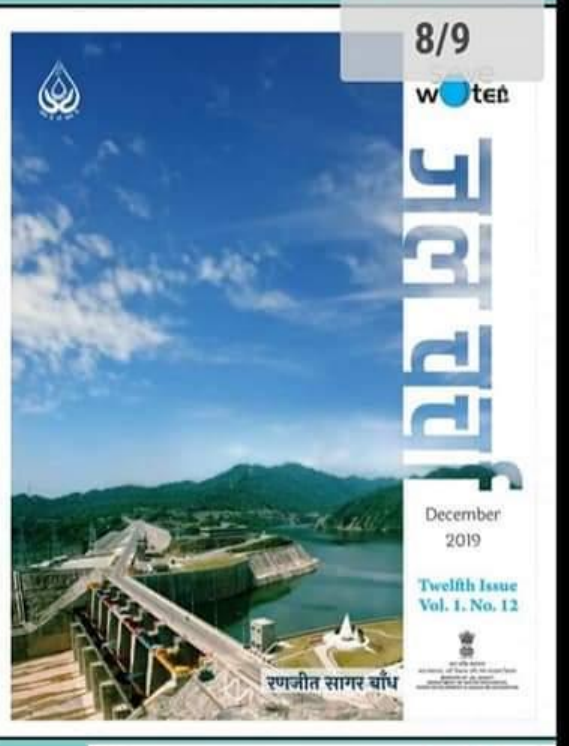

Dainik Jagran's JAL CHARCHA, a newsletter of Ministry of JAL SHAKTI, Government of India

18 March 2020

नीम नदी का लोगो हुआ लांच

नीम नदी अभियान

हापुड़ | वरिष्ठ संवाददाता

मेरठ में हापुड़ से निकल रही नीम नदी का लोगो का अनावरण करते मंडलायुक्त।

मेरठ के मण्डलायुक्त सुरेन्द्र सिंह द्वारा हापुड़ जनपद से निकलने वाली नीम नदी के लोगो का अनावरण किया।यह लोगो नीर फाउंडेशन द्वारा बनाया गया है। दिसंबर 2020 को प्रशासनिक स्तर की मीटिंग के बाद जिले से कई दशक पहले विलुप्त नदी को पुनर्जीवित करने का प्लान सिरे से चढ़ना शुरू हो गया है।

नीर फाउंडेशन ने फेसबुक और पेज तथा इसकी वेबसाइट तैयार करने के बाद अब लोगो बना दिया है। जिसका बुधवार को मेरठ कमिश्नर द्वारा विधिवकत अनावरमण कर दिया गया है। इसमें नदी, नीम के पेड़, वर्ष की बूंदें, धरती व सूर्य अर्थात जीवन के पंच तत्वों हवा, पानी, धरती, आग व आकाश को दर्शाया गया है। लोगो किसी भी कार्य करने की एक पहचान होती है। नीम नदी से जुड़े हुए सभी क्रियाकलापों में अब इस लोगो का ही इस्तेमाल होगा। मण्डलायुक्त ने लोगो की तारीफ करते हुए कहा कि चुनाव की बाद शीघ्र ही कार्य प्रारंभ करेंगे।

बोले भारत , विसभा में उठेगा मुद्दा

: बहादुरगढ़ निवासी एवं लोकभारती के प्रांतीय संयोजक भारत भूषण गर्ग ने बताया कि नीम नदी दत्तियाना से शुरू होकर अलीगढ़ के छोर क्षेत्र में जाकर एक नदी में शामिल हो जाती है। अलीगढ़ के विधायक से वार्ता की गई है।

उन्होंने बताया कि नीम नदी के पुनर्जीवित का सवाल विधानसभा में उठाया जाएगा। हर संभव नीम नदी को पुनर्जीवित कराया जाएगा।

किसान ने हरियाली के लिए दी 15 बीघा जमीन

मंडलायुक्त ने सभी को पौधरोपण के लिए प्रेरित किया

अमर उजाला ब्यूरो

बिनौली।

बरनावा गांव स्थित हिंडन और कृष्णा नदी के किनारे खेत में मंडलायुक्त डॉ. प्रभात कुमार ने फलदार पौधरोपण किया। उन्होंने कहा कि नदियों को निर्मल बनाने के लिए अधिक पौधरोपण करें। दूषित जल स्वच्छ हो जाएगा।

बरनावा में पौधरोपण करते मंडलायुक्त मेरठ प्रभात कुमार। अमर उजाला

बृहस्पतिवार को बरनावा निवासी जयनारायण त्यागी ने हिंडन और कृष्णा नदी के किनारे अपनी 15 बीघा जमीन में पौधरोपण कार्यक्रम का आयोजन किया। इसमें मुख्य अतिथि मंडलायुक्त डॉ. प्रभात कुमार रहे। उन्होंने अफसर और ग्रामीणों के साथ फल और छायादार पौधे लगाए। कार्यक्रम में उपस्थित हुए लोगों को बताया दोनों नदियों को स्वच्छ, निर्मल और अविरल बनाने के लिए मुहिम चला रखी है। प्रशासन को 40 हजार पौधरोपण करने का लक्ष्य दिया । उन्होंने कहा पेड़ पर्यावरण को शुद्ध करने में अहम भूमिका निभाते है। नदियों के किनारे पौधे लगाने से पानी स्वच्छ और शुद्ध होता है। हर किसी को एक पौधा जरूर लगाना चाहिए। दोनों नदियों के जल को स्वच्छ कराने की तैयारियां चल रही है। इस मौके पर डीएम भवानी सिंह खंगारौत ने भी विचार व्यक्त किए। इस मौके पर अफसरों ने आम, अमरूद, जामुन, नींबू सहित छायादार पौधे को लगाया। इसमें एसडीएम बड़ौत अरविंद द्विवेदी, थानाध्यक्ष चंद्रकांत पांडेय, संत भैयादास जी महाराज, प्रधान जरीफ कुरैशी, पूर्व प्रधान विष्णुदत्त त्यागी, ओमप्रकाश त्यागी, सुरेश त्यागी, परमानंद जाटव, ओमदत्त त्यागी, श्याम सिंह प्रमुख, रविंद्र हाटी, महबूब अलवी, गुड्डन त्यागी, आलोक आदि रहे।

जलांदोलन की अब है जरूरत

नदीपुत्र रमन कांत

संस्थापक-नेचुरल एनवायरमेंट एजुकेशन एंड रिसर्च फाउंडेशन, मेरठ

देश के 36 लाख जलाशयों में से सिर्फ पांच प्रतिशत ही अपने मूल स्वरूप में बचे हैं। अगर सभी जलाशयों को कब्जामुक्त करके पुनर्जीवित कर दिया जाए तो देश के करीब 50 प्रतिशत भूजल संकट का समाधान संभव हो सकेगा।

विश्व के कुल भूभाग का मात्र 2.4 प्रतिशत क्षेत्रफल ही भारत के पास है, और दुनिया की 18 प्रतिशत आबादी निवास करती है। ऐसी स्थिति में प्राकृतिक संसाधनों पर अधिक दबाव स्वाभाविक है। भारत के पास विश्व के कुल जल संसाधनों का मात्र 4 प्रतिशत ही है, उस पर खराब बात यह है कि जितना भूजल पूरा विश्व प्रतिवर्ष खींचता है उसमें 25 प्रतिशत भागीदारी अकेले भारत की है।

वर्तमान समय में 1952 के मुकाबले भारत में पानी की उपलब्धता एक तिहाई रह गई है, जबकि आबादी 36 करोड़ से बढ़कर 135 करोड़ के करीब पहुंच गई है। हालात ये हो गए हैं कि हम लगातार भूमिगत जल पर निर्भर होते जा रहे हैं। जिसके कारण भूमिगत जल प्रत्येक वर्ष औसतन एक फीट की दर से नीचे खिसक रहा है। इससे उत्तर भारत के ही करीब 15 करोड़ लोग भयंकर जल संकट से जूझ रहे हैं। भारत सरकार के जल शक्ति मंत्रालय के अध्ययन के अनुसार उद्योग व ऊर्जा क्षेत्र में कुल भूजल की मांग आज के करीब 7 प्रतिशत के मुकाबले वर्ष 2025 तक 8.5 प्रतिशत हो जाएगी जोकि वर्ष 2050 तक बढ़कर करीब 10.1 प्रतिशत हो जाएगी। कृषि में भूजल की मांग वर्ष 2010 के 77.3 प्रतिशत के मुकाबले 2050 तक घटकर 70.9 प्रतिशत ही रह जाएगी अर्थात भविष्य में जहां उद्योग व ऊर्जा में पानी की मांग बढ़ेगी व वहीं सिंचाई में घटेगी।

अब जरूरत है कि भूजल को लेने व उसे वापस लौटाने के अनुपात को हम बनाए रखें। बारिश के संरक्षण का कार्य गांवों के अंदर जहां तालाब व जोहड़ को पुनर्जीवित करके किया जा सकता है वहीं शहरों में रूफटाप वर्षाजल संरक्षण के माध्यम से ऐसा संभव है। भारत में करीब 6,64,369 गांव तथा लगभग 4000 छोटे-बड़े कस्बे-शहर मौजूद हैं। राजस्व रिकार्ड के अनुसार भारत में करीब 36 लाख जलाशय दर्ज हैं, जिनमें 30 प्रतिशत अपना अस्तित्व खो चुके हैं। शेष 95 प्रतिशत अतिक्रमण की मार झेल रहे हैं और मात्र 5 प्रतिशत ही अपने स्वरूप में बचे हुए हैं। वर्तमान में मौजूद कुल जलाशयों में से करीब 50 प्रतिशत सूखे हुए हैं और 30 प्रतिशत गंदगी से बजबजा रहे हैं। कुल मौजूद जलाशयों में से 80 प्रतिशत जलाशय अपनी जल संभरण क्षमता खो चुके हैं। देश के भूजल संकट को दूर करने के लिए सरकार व समाज दोनों को युद्ध स्तर पर प्रयास करने होंगे। इसमें जहां चुने हुए गांव प्रमुखों की महती भूमिका होगी, वहीं धार्मिक गुरूओं का भी महत्वपूर्ण योगदान होगा। देश के तमाम धर्मगुरु समाज को तालाब पुनर्जीवन का संदेश दें तो संभव है कि समाज के द्वारा एक सकारात्मक जलांदोलन खड़ा हो जाए। भारत में भू-जल उपयोग के लिए कठोर कानूनों की आवश्यकता है क्योंकि यहां साफ-पीने वाला पानी ही प्रत्येक उपयोग में लाया जाता है। हमें सिंचाई, उद्योग व कुछ घरेलू कार्यों में कस्बों व शहरों से निकलने वाले सीवेज को शोधित करके इस्तेमाल करना होगा। भू-जल बचाने व संरक्षित करने में उपभोक्तावाद में कमी करनी होगी।

खपत नियंत्रित करने की जरूरत

भूजल की खपत सिंचाई में होती है भारत में

खपत घरेलू कार्यों में होती है

भूजल व्यावसायिक कार्यों में प्रयोग होता है

संसद में पेश की गई कैग की रिपोर्ट में कहा गया है कि देश में भूजल खपत का औसत 63 प्रतिशत है। इसका अर्थ है कि सालभर में जितना पानी जमीन के अंदर गया, उसका 63 प्रतिशत बाहर निकाल लिया गया। रिपोर्ट 2004 से 2017 के आंकड़ों पर आधारित थी।

13 राज्यों में भूजल की खपत राष्ट्रीय औसत से ज्यादा पाई गई

267 जिलों में राष्ट्रीय औसत से ज्यादा भूजल निकाला गया

पंजाब, हरियाणा, दिल्ली और राजस्थान में भूजल खपत 100 प्रतिशत से भी ज्यादा है। यानी इन राज्यों में भूजल स्तर लगातार गिर रहा है।

अविरल बहेगी काली नदी, किनारे होंगे हरे

बसंत गौतम ● खतौली

अंतवाड़ा गांव में उद्गम स्थल से ही काली (नागिन) नदी को जीवनदान मिलेगा। उसको पुनर्जीवित का भगीरथ प्रयास इस वर्ष आकार लेगा। इससे नदी अपने असल आकार में अविरल बहेगी, जबकि इसकी पटरियों पर हरियाली से सुंदरता को बढ़ावा मिलेगा। इससे भूजल संरक्षण के साथ ही किसानों की फसल पर भी सकारात्मक प्रभाव होगा।

अंतवाड़ा में काली नदी का उद्गम सदियों पुराना है। समय की परत में इसका इतिहास दबने के साथ अविरलता भी नष्ट हो गई। वर्तमान में नदी में जल जरूर है, लेकिन इसका जल प्रयोग करने लायक नहीं बचा है। इसके चलते काली नदी संरक्षण और इसके जल प्रवाह को बढ़ाने की कवायद भी आकार ले रही है। खतौली से कन्नौज तक जाने वाली इस नदी की निर्मलता पर धीरे-धीरे ध्यान देना बंद कर दिया था। नीर फाउंडेशन ने नदी को उसका पुराना गौरव लौटाने का प्रयास किया, लेकिन बजट के अभाव में काम में अड़ंगा लग गया। इस वर्ष नदी को फिर से पुजर्जीवित करने का बीड़ा उठाया जा रहा है। मनरेगा से नदी के दोनों ओर पटरी की सफाई और हरियाली के लिए पौधरोपण किया जाएगा। नदी को पुनर्जीवित करने पर अर्थ डे नेटवर्क ने अंतवाड़ा गांव को स्टार विलेज का अवार्ड दिया था।

खतौली के गांव अंतवाड़ा स्थित काली नदी का उद्गम स्थल। जागरण

छह सौ किमी लंबा है काली नदी का प्रवाह क्षेत्र

काली नदी पूर्वी का अंतवाड़ा गांव उद्गम स्थल से छह सौ किलोमीटर लंबा प्रवाह क्षेत्र है। यह नदी मेरठ, हापुड़, बुलंदशहर, अलीगढ़, कासगंज, एटा, फर्रुखाबाद होते हुए कन्नौज जाकर गंगा नदी में मिलती है। यह बरसाती नदी है, जो गंगा की प्रमुख सहायक नदी है। काली नदी के पुनर्जीवित होने से लोगों को उसके पानी का लाभ मिलेगा और आने वाले समय यह नदी देश की तमाम छोटी नदियों के पुनरोद्धार के लिए प्रेरणा बनेगी।

काली नदी पूर्वी को पुनर्जीवित में अभी तक श्रमदान से काम हुआ। शासन को बजट का प्रस्ताव भेजा है। नदी को जिंदा रखने के लिए चेक डैम, वेट लैंड, बिजली के खंभे हटवाने, लघु सिंचाई विभाग को डिजाइन बनाने का प्रस्ताव भेजा है। काली नदी की निर्मलता लौटने की अनूठी पहल होगी।

-रमन त्यागी, निदेशक नीर फाउंडेशन

काली नदी के साथ ही जल संरक्षण के लिए गांवों में तालाबों को पुनर्जीवित किया जा रहा है। घटते जलस्तर को उठाने के लिए अमृत सरोवर योजना के तहत तालाबों का सुंदरीकरण कराया गया है। उनमें बरसात का पानी रुक सकेगा। पानी बचाकर भविष्य को सुरक्षित किया जा सकेगा।

- शमा सिंह, बीडीओ, खतौली

जमीन देने वाले को युगों तक करेंगे याद : स्वतंत्र देव

गांव दतियाना में नीम नदी उद्गम पुनर्जीवन उत्सव में प्रदेश के जल शक्ति मंत्री और राज्य मंत्री हुए शामिल

नीम नदी से मिलेगा लाभ

मैं नीम नदी, मुझे मिली जीवन की मिठास

मेरा पानी औषधीय गुणों वाला था...

दैनिक जागरण कार्यालय

9810903214

दैनिक जागरण प्रश्न प्रहर

आज अभिभावकों की समस्याएं सुनेंगी बीएसए

एक नजर में

20 मई को हापुड़ पहुंचेगी मशाल रैली

आंदोलन को गति देने के लिए बनाई रणनीति

'देशवासियों ने किया तय, अबकी बार भी मोदी सरकार'

नदी कार्य में सहयोग करने वालों को किया सम्मानित

आज का विचार

"अगर आप जिंदगी में कुछ हासिल करना, चाहते हो तो मेहनत से दोस्ती कर लो !"

कौन लड़ेगा बाबा-काबा से... 04

नरेंद्र कश्यप ने जिलाधिकारी और पुलिस आयुक्त... 08

सर्राफा/बाजार

सोना प्रति 10 ग्राम ₹ 62,265 | चांदी प्रति किलो 74,600 ₹

सेंसेक्स

सेंसेक्स 1.23% ▼ 61,560.64 | ▼ 1.14% निफ्टी 18,181.81

www.dainikhint.com

@DainikHint

दैनिक हिन्ट

हमेशा आपके साथ

जोश, जुनून और जनता से जुड़ी खबरें | स्थापना : 1963

सुबह 5.28 - शाम 6.07

तापमान

अधिकतम 38° - न्यूनतम 27°

एक्यूआई : 255

वर्ष : 41 | अंक : 273 | गाजियाबाद, शुक्रवार, 19 मई, 2023 | पेज : 08 | मूल्य : 02 ₹ | गाजियाबाद, नोएडा, दिल्ली, मेरठ, हापुड़, बुलंदशहर, बागपत, शामली, मुजफ्फरनगर व सहारनपुर से प्रसारित | डाक पंजीयन संख्या यूपी /GBD-166/2016-18

काली नदी के प्रदूषण पर इमरजेंसी क्लोजर कार्रवाई

हिन्ट संवाददाता

मुजफ्फरनगर। हिण्डन नदी एवं काली नदी पश्चिमी में जल प्रदूषण को नियंत्रित किये जाने एवं ऐसे उद्योग जो अशुद्धिकृत उत्प्रवाह को काली नदी पश्चिमी एवं हिण्डन नदी में निस्तारित कर रहे हैं, के विरूद्ध सख्त कार्यवाही किये जाने के निर्देश शासन स्तर पर, मण्डल स्तर पर आयुक्त व जिला स्तर पर जिलाधिकारी द्वारा दिये गये हैं, जिसके सम्बन्ध में नियमित रूप से विभिन्न स्तरों पर बैठकें भी आयोजित की जा रही हैं। जनपद में हिण्डन नदी में प्रदूषण का मुख्य स्त्रोत काली नदी पश्चिमी है, जिसके कैचमेन्ट एरिया में मुख्यतः पल्प एण्ड पेपर उद्योग संचालित हैं। प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा नियमित रूप से रात्रि में भी धन्धेडा नाला, बेगराजपुर नाला (मुख्य प्रदूषण स्त्रोत) का निरीक्षण किया जा रहा है। यदि किसी उद्योग से अशुद्धिकृत उत्प्रवाह निस्तारित होता पाया जा रहा है तो सीधे उत्पादन बन्दी की कार्यवाही की जा रही है। इस हेतु प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा सभी जल प्रदूषणकारी उद्योगों को पूर्व में भी सचेत किया गया है। विभाग द्वारा आज उद्योग मै0 जीनस पेपर एण्ड बोर्ड्स लि0 (यूनिट-2), 8वां किमी0, जानसठ रोड, मुजफ्फरनगर से अशुद्धिकृत उत्प्रवाह का निस्तारण पाये जाने पर प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा बन्दी आदेश जारी किये गये तथा क्षेत्रीय अधिकारी द्वारा सीलिंग की कार्यवाही करते हुए उद्योग को बन्द करा दिया गया।

क्षेत्रीय अधिकारी प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा सभी उद्योगों को सचेत किया गया है कि यदि कोई भी उद्योग हिण्डन नदी/काली नदी पश्चिमी को प्रदूषित करता हुआ पाया जाता है तो ऐसी स्थिति में उद्योग के विरूद्ध तत्काल इमरजेन्सी क्लोजर की कार्यवाही की जायेगी।

नदी से लगे तीन जिलों के सैंकड़ों गांवों का भूजल स्तर होगा ऊंचा, करीब एक किमी तक के गांव इससे होंगे लाभांवित, तैयार हुआ माडल

ऋषि दत्तात्रेय की तपोस्थली से बहेगी नीम नदी

आओ बचाएं नीम नदी

- इसी बरसात में पुराने अस्तित्व को पाएगी नीम नदी
- सैकड़ों गांवों के लिए बनेगी जीवन रेखा
- शासन ने संभाली नदी को पुनर्जीवन देने की कमान

कहां से होकर गुजरती है नीम नदी

नदी क्षेत्र:- 14 किमी

जिला अलीगढ़

नदी क्षेत्र:- 40 किमी

जिला बुलंदशहर

नदी क्षेत्र:- 134 किमी

नीम नदी के बारे में यह भी जानें

स्वयं सहायता समूह की महिलाओं ने किया श्रमदान

लोगों में जगा उत्साह, सहयोग के लिए बढ़े हाथ

अब वह दिन दूर नहीं जब नदी में बहेगा पानी...

श्रमदान के लिए संकल्प लेने वाले युवाओं को भी याद दिलाया वादा

श्रमदान कर छात्र-छात्राएं बने भागीदार

नीम नदी की बात अब तो प्रधानमंत्री ने भी कर दी

मन की बात में नीम नदी का किया जिक्र, ग्रामीणों में उत्साह

जागरण संवाददाता, हापुड़: सुबह का पौने ग्यारह बज रहे हैं...। हापुड़ जिले के गांव दतियाना में कुछ लोग ट्रैक्टर तो कुछ बुग्गी से खेत से चारा काटकर अपने-अपने घर की ओर बढ़ रहे हैं...। कुछ लोग वहीं एक दुकान पर बैठकर चर्चा कर रहे हैं...। आज प्रधानमंत्री मन की बात में हमारे गांव की नीम नदी की बात करेंगे...। वहां बैठे गांव के ही रामपाल कहते हैं कि यह बड़ी बात होगी कि हमारे गांव की नदी की प्रधानमंत्री चर्चा करेंगे...। पास में बैठे सुबोध कहते हैं कि चाचा नीम नदी ने हमारे गांव की पहचान पूरे देश दुनिया में करा दी है...। अभी तक तो हमारा गांव भूतों वाले मंदिर के नाम से जाना जाता था। अभी कुछ दिन पहले ही मैंने किसी को फोन किया था जब मैंने अपना परिचय दिया तो उधर से पूछा कि क्या वही नीम नदी वाले गांव से बोल रहे हैं...। तब मुझे लगा कि नीम नदी की चर्चा दूर-दूर तक हो रही है...। वहां से गुजर रही पिंकी ने कहा जल्दी टीवी खोल लो प्रधानमंत्री के मन की बात शुरू होने जा रही है...। यह सुनकर सभी अपने-अपने घर की ओर बढ़ जाते हैं। हम भी नीर फाउंडेशन के संस्थापक रमन कांत त्यागी और राजीव त्यागी के साथ एक कमरे की ओर बढ़ जाते हैं। यह मकान गांव के प्रधान रजनीश त्यागी का है। कुछ ही देर में प्रधानमंत्री की मन की बात कार्यक्रम शुरू हो जाता है।

प्रधानमंत्री की बात के साथ ही वहां बैठे सभी लोगों के चेहरे पर गजब की खुशी थी। जैसे उन्हें लग रहा था कि उन्होंने कोई बड़ी जीत हासिल कर ली हो। सभी एक दूसरे को बधाई देने लगे। दैनिक जागरण की भूरि-भूरि प्रशंसा करने लगे। यदि दैनिक जागरण और नीर फाउंडेशन इस मामले को लेकर नहीं चलते तो आज नीम नदी का पुनर्जीवन संभव नहीं था। वहां से कुछ लोग नीम नदी के किनारे पहुंचे और उसको देखकर काफी देर तक निहारते रहे।

नीम नदी के किनारे मस्ती करते देवनंदनी अस्पताल के चिकित्सक डाक्टर श्याम कुमार दाएं से पहले टी-शर्ट व काले चश्मे में। डाक्टर विमलेश। दाएं से तीसरे नंबर पर। सबसे बाएं डाक्टर गोविंद सबसे पीछे रिवर मैन रमनकांत त्यागी ● जागरण

नीम नदी को दैनिक जागरण ने मुहिम चलाकर फिर से जीवित करने का काम किया है। मुझे अच्छा लगा कि मेरी ग्राम पंचायत का नाम प्रधानमंत्री ने लिया है। **– पूनम त्यागी**, ग्राम प्रधान दतियाना

दैनिक जागरण ने नीम नदी को एक अलग ही पहचान दी। और आज प्रधानमंत्री ने मन की बात में नीम नदी का जिक्र किया। इससे बड़े गौरव की बात गांव के लिए नहीं हो सकती। **– दिव्यांश त्यागी**, ग्रामीण, गांव दतियाना

एक छोटी सी चिंगारी के रूप में दैनिक जागरण ने नीम नदी को जीवित करने के लिए मुहिम चलाई। धीरे धीरे आज वह ज्वाला बन गई है। क्योंकि, प्रधानमंत्री ने भी इसका जिक्र कर नदी को जीवित करने के लिए प्रेरित किया है। **– मनवीर सिंह**, पूर्व सैनिक

यह हमारा सौभाग्य है कि नीम नदी का उद्गम स्थल हमारे गांव में है। इसी कारण आज देश के प्रधानमंत्री ने भी अपने मन की बात में यहां का जिक्र किया है। **– अजय त्यागी**, ग्रामीण दतियाना

नीम नदी के फिर से जीवित होने से जल संरक्षण को बढ़ावा मिल सकेगा। इसका जिक्र प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपनी मन की बात में किया है। जल संरक्षण को लेकर हमें भी जागरूक होना चाहिए। **– पवन त्यागी**, दतियाना

हमारे क्षेत्र से होकर गुजर रही नीम नदी कभी लुप्त हो गई थी। उसको जीवित करने के लिए दैनिक जागरण की मुहिम रंग लाई। आज इसका श्रेय दैनिक जागरण परिवार को जाता है। **– सुभाष, प्रधान** हिम्मतपुर

निरंतर बहे नदी ...अभी करने होंगे और प्रयास

तरुण त्यागी ● हापुड़

दैनिक जागरण और नीर फाउंडेशन पिछले करीब ढाई वर्ष से नीम नदी के उद्गम स्थल को पुनर्जीवित करने के लिए काम कर रहे हैं। ढाई वर्ष पहले की स्थिति पर गौर करें तो नदी का बहाव क्षेत्र देखने के लिए ट्रैक्टर ट्राली में बैठकर पहली यात्रा करनी पड़ी थी। कुछ लोगों ने नदी के उद्गम स्थल पर अतिक्रमण करके उसका गला ही घोंट दिया था। धीरे-धीरे नदी का नामोनिशान मिट गया था। कहा जाता है कि ईश्वर उसी के साथ होता है जो प्रयास करता है। उसका फलाफल है कि आज नीम नदी के उद्गम को पुनर्जीवन मिल सका है।

वर्ष 2021 जनवरी में दैनिक जागरण को जानकारी मिली की गांव दतियाना में नीम नदी है उस पर काम किया जाना चाहिए। इसको लेकर नीर फाउंडेशन के संस्थापक रिवर मैन आफ इंडिया रमन कांत त्यागी से बात की तो उन्होंने भी हामी भर दी। दोनों मिलकर गांव दतियाना पहुंचे और सरकारी दस्तावेज के अनुसार नदी के उद्गम स्थल को तलाशा। वहां का नजारा देखकर लगा कि यहां नदी जैसी कोई चीज है ही नहीं है। दोनों ने तय किया कि इस नदी को हर हाल में पुनर्जीवित किया जाएगा। बस यहीं से नदी को पुनर्जीवित करने की शुरुआत कर दी।

सबसे पहले गांव के लोगों को जोड़ा: गांव के लोगों को इकट्ठा करके ट्रैक्टर- ट्राली में बैठाकर नदी के उद्गम स्थल पर पहुंचे। सभी को नदी के महत्व की जानकारी रमन कांत ने दी और बताया कि एक नदी के जीवित होने से कितना लाभ मिलेगा। वहां मौजूद अधिकांश लोगों को यह सब मजाक सा लग रहा था। पर हमारे दृढ़ संकल्प के आगे वह कुछ कहने की स्थिति में नहीं थे। हालात यह थे कि नदी का बहाव क्षेत्र देखने के लिए किसी गाड़ी या मोटरसाइकिल से जाना संभव नहीं था। इसलिए ट्रैक्टर का सहारा लिया और उसमें बैठकर नदी के किनारे भ्रमण किया। देखा और जाना कि नदी को पुनर्जीवित करने के लिए क्या-क्या प्रयास करने होंगे। हापुड़ जिले में नदी के किनारे आठ गांव पड़ते हैं। उन सभी में जाकर लोगों को नदी के महत्व के बारे में जानकारी दी। धीरे-धीरे लोग इस अभियान से जुड़ने लगे। दैनिक जागरण ने स्कूल, कालेज, बुद्धिजीवी, चिकित्सक, सेवानिवृत्त अधिकारी कर्मचारियों के बीच जागरूकता अभियान चलाया। इसमें रमन कांत त्यागी के साथ खेल प्रशिक्षक मदन सैनी ने लोगों को नदी के उपयोग के बारे में बताया।

यात्रा अभी लंबी है: नीम नदी का उद्गम तो पुनर्जीवित हो गया है, लेकिन अभी नदी का सफर 188 किमी लंबा है। उसकी चौड़ाई को लेकर भी संशय है। इस मुद्दे को नीम नदी उद्गम पुनर्जीवन उत्सव के दौरान रिवरमैन आफ इंडिया रमनकांत त्यागी ने जल शक्ति मंत्री स्वतंत्र देव सिंह के समक्ष भी उठाया था। कहा था कि नदी की जमीन का चिह्नांकन किया जाना चाहिए, ताकि नीम नदी की पटरी पर पौधारोपण किया जा सके और नदी को उसकी खुराक मिल सके। नीम नदी हापुड़ से बहकर बुलंदशहर, अलीगढ़ और फिर कासगंज जिले में जाकर काली नदी में मिलती है। बुलंदशहर, अलीगढ़ और कासगंज के लोगों ने भी नदी के बहाव क्षेत्र की साफ सफाई कई बार की है। नदी के किनारे पर कहीं भी पेड़ पौधे नहीं हैं। इसके कारण भूजल रीचार्ज की कल्पना निरर्थक है।

कारवां बढ़ता गया

- 28 मार्च 2021 को प्रदेश के राजस्व व बाढ़ नियंत्रण राज्य मंत्री विजय कश्यप ने जायजा लिया।
- सात जून को नदी के उद्गम स्थल पर श्रमदान किया। जेसीबी मशीन लगवाकर नदी की खोदाई का काम शुरू कराया।
- 14 जून को शूटर दादी प्रकाशी भी श्रमदान करने नदी के उद्गम स्थल पर पहुंचीं।
- जिला प्रशासन ने हापुड़ जिले की 14 किमी के बहाव क्षेत्र को मशीन से साफ कराया।
- बुलंदशहर के जिलाधिकारी रवींद्र कुमार ने भी अपनी सीमा में सफाई कराई।
- 30 जुलाई को प्रदेश के जल शक्ति मंत्री स्वतंत्र देव ने गांव सिखेड़ा के पास नदी के बहाव क्षेत्र को देखा और कहा कि नीम नदी हर हाल में पुनर्जीवित होगी।
- लघु सिंचाई विभाग ने एक प्रस्ताव बनाकर शासन को भेजा और वहां से करीब 48 लाख रुपये नदी को पुनर्जीवित करने के लिए दिया गया। पुनर्जीवन की राह आगे बढ़ी।

बनेगी नीम परिषद

अब नीम नदी के संपूर्ण पुनर्जीवन के लिए प्रयास आगे बढ़ाए जाएंगे। इसके लिए शीघ्र नीम परिषद का गठन किया जाएगा। इस परिषद में नीम नदी किनारे के गांवों के प्रधानों की महत्वपूर्ण भूमिका तय की जाएगी। इसके लिए उनके नेतृत्व में नदी पुनर्जीवन समितियों का गठन किया जाएगा। नीम नदी उद्गम व उससे आगे की नदी की दूरी को लेकर दो अलग-अलग योजनाएं तय की जा रही हैं। जहां उद्गम को हरा भरा बनाने के प्रयास किए जाएंगे। वहीं नदी के आगे की लंबाई के सुधार हेतु पदयात्रा करके समाज को जागरूक किया जाएगा।

नीम नदी के नवजागरण पर प्रधानमंत्री ने नीम नदी का उदाहरण दिया है। जो दूसरे नदी सेवक है उनमें उत्साह का संचार होगा और प्रकृति के प्रति नवजागरूकता आएगी। ऐसी नदियां और प्राकृतिक धरोहरों को बचाने के लिए आगे बढ़कर कार्य करेंगे। दैनिक जागरण की इस मुहिम के बिना यह कार्य संभव नहीं था। **–मदन सैनी**, खेल प्रशिक्षक

आज सभी लोग गदगद है। प्रधानमंत्री ने जिस तरह से मन की बात कार्यक्रम में नीम नदी की बात की है इससे छोटी-छोटी नदियों को पुनर्जीवन देने का काम आगे बढ़ेगा। प्रदेश सरकार से लेकर जिला प्रशासन ने भी नदी को पुनर्जीवित करने में काफी सहयोग किया है। दैनिक जागरण को तो इसका पूरा श्रेय जाता है। **राजीव त्यागी**, दतियाना

अब नीम नदी छोट नहीं रह गई है। देश का शीर्ष नेतृत्व का यदि मन की बात में इसका जिक्र करता है तो यह बड़ी बात है। दैनिक जागरण के समर्थन से नीम नदी को लेकर जो यात्रा शुरू हुई थी आज उसने व्यापक रूप ले लिया है। अब कोई संदेह नहीं रह गया है कि पूरी नीम नदी ही पुनर्जीवित हो जाएगी। **– डा. अशोक मैत्रेय**, साहित्यकार

लोगों ने दैनिक जागरण के साथ साझा की खुशी

जासं, हापुड़: प्रधानमंत्री ने रविवार को मन की बात के 102वें एपिसोड में नीम नदी के पुनर्जीवित होने पर इसकी चर्चा की। नदी को पुनर्जीवन में कई लोगों ने कार्य किया, जिसके फलस्वरूप ही आज नीम नदी पुनर्जीवित हो पाई है। दैनिक जागरण ने इस मौके पर उन सभी लोगों से बात कर उनकी खुशी को साझा किया...

प्रधानमंत्री ने जिस तरह से हापुड़ जिले की नीम नदी के उद्गम के पुनर्जीवन को मन की बात में शामिल किया यह हमारे लिए गर्व की बात है। प्रधानमंत्री की बात हम सभी के लिए प्रेरणा है। हम लोग और अधिक ऊर्जा से काम करेंगे। जिन लोगों ने जिस भी रूप में इस पुनीत कार्य में अपने योगदान दिया वह सभी साधुवाद के पात्र है। जिस तरह से दैनिक जागरण और नीर फाउंडेशन ने मिलकर काम किया है इसे समाज सदा याद रखेगा। **– स्वतंत्र देव**, जलशक्ति मंत्री उत्तर प्रदेश सरकार

मैंने भी नीम नदी के उद्गम पर जाकर नदी को पुनर्जीवन देने के लिए श्रमदान किया था। आज जब प्रधानमंत्री ने नीम नदी को लेकर चर्चा की तो बहुत अच्छा लगा। दैनिक जागरण और नीर फाउंडेशन का मैं शुक्रिया अदा करती हूं कि उन्होंने मुझे मौका दिया। **–प्रकाशी तोमर**, शूटर दादी

सभी के सहयोग से उस समय नीम नदी को पुनर्जीवित करने का बीड़ा उठाया था। मैंने भी श्रमदान किया था। पश्चिमी उत्तर प्रदेश में सबसे तेजी से भूजल स्तर नीचे जा रहा है। यह चिंता का विषय है। **– सुरेंद्र सिंह**, तत्कालीन कमीश्नर

माननीय प्रधानमंत्री द्वारा मन की बात कार्यक्रम में नीम नदी उद्गम पुनर्जीवन के प्रयास का जिक्र करना हमारा उत्साह बढ़ाने वाला है। अब हमारी जिम्मेदारी और भी अधिक हो गई है। **–रमन कांत त्यागी**, रिवरमैन आफ इंडिया

नीम नदी की बात अब तो प्रधानमंत्री ने भी कर दी

मन की बात में नीम नदी का किया जिक्र, ग्रामीणों में उत्साह

जागरण संवाददाता, हापुड़: सुबह का पौने ग्यारह बज रहे हैं...। हापुड़ जिले के गांव दतियाना में कुछ लोग ट्रैक्टर तो कुछ बुग्गी से खेत से चारा काटकर अपने-अपने घर की ओर बढ़ रहे हैं...। कुछ लोग वहीं एक दुकान पर बैठकर चर्चा कर रहे हैं...। आज प्रधानमंत्री मन की बात में हमारे गांव की नीम नदी की बात करेंगे...। वहां बैठे गांव के ही रामपाल कहते हैं कि यह बड़ी बात होगी कि हमारे गांव की नदी की प्रधानमंत्री चर्चा करेंगे...। पास में बैठे सुबोध कहते हैं कि चाचा नीम नदी ने हमारे गांव की पहचान पूरे देश दुनिया में करा दी है...। अभी तक तो हमारा गांव भूतों वाले मंदिर के नाम से जाना जाता था। अभी कुछ दिन पहले ही मैंने किसी को फोन किया था जब मैंने अपना परिचय दिया तो उधर से पूछा कि क्या वही नीम नदी वाले गांव से बोल रहे हैं...। तब मुझे लगा कि नीम नदी की चर्चा दूर-दूर तक हो रही है...। वहां से गुजर रही पिंकी ने कहा जल्दी टीवी खोल लो प्रधानमंत्री के मन की बात शुरू होने जा रही है...। यह सुनकर सभी अपने-अपने घर की ओर बढ़ जाते हैं। हम भी नीर फाउंडेशन के संस्थापक रमन कांत त्यागी और राजीव त्यागी के साथ एक कमरे की ओर बढ़ जाते हैं। यह मकान गांव के प्रधान रजनीश त्यागी का है। कुछ ही देर में प्रधानमंत्री की मन की बात कार्यक्रम शुरू हो जाता है।

प्रधानमंत्री की बात के साथ ही वहां बैठे सभी लोगों के चेहरे पर गजब की खुशी थी। जैसे उन्हें लग रहा था कि उन्होंने कोई बड़ी जीत हासिल कर ली हो। सभी एक दूसरे को बधाई देने लगे। दैनिक जागरण की भूरि-भूरि प्रशंसा करने लगे। यदि दैनिक जागरण और नीर फाउंडेशन इस मामले को लेकर नहीं चलते तो आज नीम नदी का पुनर्जीवन संभव नहीं था। वहां से कुछ लोग नीम नदी के किनारे पहुंचे और उसको देखकर काफी देर तक निहारते रहे।

नीम नदी के किनारे मस्ती करते देवनन्दनी अस्पताल के चिकित्सक डाक्टर श्याम कुमार दाएं से पहले टी-शर्ट व काले चश्मे में, डाक्टर विमलेश। दाएं से तीसरे नंबर पर, सबसे बाद डाक्टर गोविंद, सबसे पीछे रिवर मैन रमनकांत त्यागी ● जागरण

❝ नीम नदी को दैनिक जागरण ने मुहिम चलाकर फिर से जीवित करने का काम किया है। मुझे अच्छा लगा कि मेरी ग्राम पंचायत का नाम प्रधानमंत्री ने लिया है। - **पूनम त्यागी**, ग्राम प्रधान दतियाना

दैनिक जागरण ने नीम नदी को एक अलग ही पहचान दी। और आज प्रधानमंत्री ने मन की बात में नीम नदी का जिक्र किया। इससे बड़े गौरव की बात गांव के लिए नहीं हो सकती। - **दिव्यांश त्यागी**, ग्रामीण, गांव दतियाना

एक छोटी सी धारा के रूप में दैनिक जागरण ने नीम नदी को जीवित करने के लिए मुहिम चलाई। धीरे-धीरे आज वह ज्वाला बन गई है। क्योंकि, प्रधानमंत्री ने भी इसका जिक्र कर नदी को जीवित करने के लिए प्रेरित किया है। - **मनवीर सिंह**, पूर्व सैनिक

यह हमारा सौभाग्य है कि नीम नदी का उद्गम स्थल हमारे गांव में है। इसी कारण आज देश के प्रधानमंत्री ने भी अपनी मन की बात में यहां का जिक्र किया है। - **अजय त्यागी**, ग्रामीण दतियाना

नीम नदी के फिर से जीवित होने से जल संरक्षण को बढ़ावा मिल सकेगा। इसका जिक्र प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपनी मन की बात में किया है। जल संरक्षण को लेकर हम भी जागरूक होना चाहिए। - **पवन राणा**, दतियाना

हमारे क्षेत्र से होकर गुजर रही नीम नदी कभी लुप्त हो गई थी। उसको जीवित करने के लिए दैनिक जागरण की मुहिम रंग लाई। आज इसका श्रेय दैनिक जागरण परिवार को जाता है। - **सुभाष**, **प्रधान** हिम्मतपुर

निरंतर बहे नदी ...अभी करने होंगे और प्रयास

ललित त्यागी ● हापुड़

दैनिक जागरण और नीर फाउंडेशन पिछले करीब ढाई वर्ष से नीम नदी के उद्गम स्थल को पुनर्जीवित करने के लिए काम कर रहे हैं। ढाई वर्ष पहले की स्थिति पर गौर करें तो नदी का बहाव क्षेत्र देखने के लिए ट्रैक्टर ट्राली में बैठकर पहली यात्रा करनी पड़ी थी। कुछ लोगों ने नदी के उद्गम स्थल पर अतिक्रमण करके इसका गला ही घोंट दिया था। धीरे-धीरे नदी का नामोनिशान मिट गया था। कहा जाता है कि ईश्वर उसी के साथ होता है जो प्रयास करता है। इसका फलाफल है कि आज नीम नदी के उद्गम को पुनर्जीवन मिल सका है।

वर्ष 2021 जनवरी में दैनिक जागरण को जानकारी मिली की गांव दतियाना में नीम नदी है उस पर काम किया जाना चाहिए। इसको लेकर नीर फाउंडेशन के संस्थापक रिवर मैन आफ इंडिया रमन कांत त्यागी से बात की तो उन्होंने भी हामी भर दी। दोनों मिलकर गांव दतियाना पहुंचे और सरकारी दस्तावेज के अनुसार नदी के उद्गम स्थल की तलाश। वहां का नजारा देखकर लगा कि यहां नदी जैसी कोई चीज है ही नहीं है। दोनों ने तय किया कि इस नदी को हर हाल में पुनर्जीवित किया जाएगा। बस यहीं से नदी को पुनर्जीवित करने की शुरुआत कर दी।

सबसे पहले गांव के लोगों को जोड़ा: गांव के लोगों को इकट्ठा करके ट्रैक्टर- ट्राली में बैठाकर नदी के उद्गम स्थल पर पहुंचे। सभी को नदी के महत्व की जानकारी रमन कांत ने दी और बताया कि एक नदी के जीवित होने से कितना लाभ मिलेगा। वहां मौजूद अधिकांश लोगों को यह सब मजाक सा लग रहा था। पर हमारे दृढ़ संकल्प के आगे यह कुछ कहने की स्थिति में नहीं थे। हालात यह थे कि नदी का बहाव क्षेत्र देखने के लिए किसी गाड़ी या मोटरसाइकिल से जाना संभव नहीं था। इसलिए ट्रैक्टर का सहारा लिया और उसमें बैठकर नदी के किनारे भ्रमण किया। देखा और जाना कि नदी को पुनर्जीवित करने के लिए क्या-क्या प्रयास करने होंगे। हापुड़ जिले में नदी के किनारे आठ गांव पड़ते हैं। उन सभी में जाकर लोगों को नदी के महत्व के बारे में जानकारी दी। धीरे-धीरे लोग इस अभियान से जुड़ने लगे। दैनिक जागरण ने स्कूल, कालेज, बुद्धिजीवी, चिकित्सक, सेवानिवृत्त अधिकारी कर्मचारियों के बीच जागरूकता अभियान चलाया। इसमें रमन कांत त्यागी के साथ खेल प्रशिक्षक मदन सैनी ने लोगों को नदी के उपयोग के बारे में बताया।

यात्रा अभी लंबी है: नीम नदी का उद्गम तो पुनर्जीवित हो गया है, लेकिन अभी नदी का सफर 188 किमी लंबा है। उसकी चौड़ाई को लेकर भी संशय है। इस मुद्दे को नीम नदी उद्गम पुनर्जीवन उत्सव के दौरान रिवरमैन आफ इंडिया रमनकांत त्यागी ने जल शक्ति मंत्री स्वतंत्र देव सिंह के समक्ष भी उठाया था। कहा था कि नदी की जमीन का चिह्नांकन किया जाना चाहिए, ताकि नीम नदी की पटरी पर पौधारोपण किया जा सके और नदी को उसकी स्वरूप मिल सके। नीम नदी हापुड़ से बहकर बुलंदशहर, अलीगढ़ और फिर कासगंज जिले में जाकर काली नदी में मिलती है। बुलंदशहर, अलीगढ़ और कासगंज के लोगों ने भी नदी के बहाव क्षेत्र को साफ सफाई कई बार की है। नदी के किनारे पर कहीं भी पेड़ पौधे नहीं हैं। इसके कारण भूजल रीचार्ज की कल्पना निरर्थक है।

कारवां बढ़ता गया

- 28 मार्च 2021 को प्रदेश के राजस्व व बाढ़ नियंत्रण राज्य मंत्री विजय कश्यप ने जायजा लिया।
- सात जून को नदी के उद्गम स्थल पर श्रमदान किया। जेसीबी मशीन लगवाकर नदी की खोदाई का काम शुरू कराया।
- 14 जून को शूटर दादी प्रकाशी भी श्रमदान करने नदी के उद्गम स्थल पर पहुंचीं।
- जिला प्रशासन ने हापुड़ जिले की 14 किमी के बहाव क्षेत्र को मशीन से साफ कराया।
- बुलंदशहर के जिलाधिकारी रविंद्र कुमार ने भी अपनी सीमा में सफाई कराई।
- 30 जुलाई को प्रदेश के जल शक्ति मंत्री स्वतंत्र देव ने गांव सिखेड़ा के पास नदी के बहाव क्षेत्र को देखा और कहा कि नीम नदी हर हाल में पुनर्जीवित होगी।
- लघु सिंचाई विभाग ने एक प्रस्ताव बनाकर शासन को भेजा और वहां से करीब 48 लाख रुपये नदी को पुनर्जीवित करने के लिए दिया गया। पुनर्जीवन की राह आगे बढ़ी।

बनेगी नीम परिषद

अब नीम नदी के संपूर्ण पुनर्जीवन के लिए प्रयास आगे बढ़ाए जाएंगे। इसके लिए शीघ्र नीम नदी परिषद का गठन किया जाएगा। इस परिषद में नीम नदी किनारे के गांवों के प्रधानों की महत्वपूर्ण भूमिका तय की जाएगी। इसके लिए उनके नेतृत्व में नदी पुनर्जीवन समितियों का गठन किया जाएगा। नीम नदी उद्गम व उससे आगे की नदी की दूरी को लेकर भी अलग-अलग योजनाएं तय की जा रही हैं। जहां उद्गम को हरा भरा बनाने के प्रयास किए जाएंगे। वहीं नदी के आगे की लंबाई के सुधार हेतु पदयात्रा करके समाज को जागरूक किया जाएगा।

नीम नदी के नवजागरण पर प्रधानमंत्री ने नीम नदी का उदाहरण दिया है। जो दूसरे नदी सेवक हैं उनमें उत्साह का संचार होगा और प्रकृति के प्रति नवजागरूकता आएगी। ऐसी नदियां और प्राकृतिक धरोहरों को बचाने के लिए आगे बढ़कर कार्य करेंगे। दैनिक जागरण की इस मुहिम के बिना यह कार्य संभव नहीं था। -**मदन सैनी**, खेल प्रशिक्षक

आज सभी लोग गदगद हैं। प्रधानमंत्री ने जिस तरह से मन की बात कार्यक्रम में नीम नदी की बात की है इससे छोटी-छोटी नदियों को पुनर्जीवन देने का काम आगे बढ़ेगा। प्रदेश सरकार से लेकर जिला प्रशासन ने भी नदी को पुनर्जीवित करने में काफी सहयोग किया है। दैनिक जागरण को तो इसका पूरा श्रेय जाता है। **राजीव त्यागी**, दतियाना

अब नीम नदी छोटा नहीं रह गई है। देश का शीर्ष नेतृत्व का यदि मन की बात में इसका जिक्र करता है तो यह बड़ी बात है। दैनिक जागरण के समर्थन से नीम नदी को लेकर जो यात्रा शुरू हुई थी आज उसने व्यापक रूप ले लिया है। अब कोई संदेह नहीं रह गया है कि पूरी नीम नदी ही पुनर्जीवित हो जाएगी। - **डा. अशोक मैत्रेय**, साहित्यकार

लोगों ने दैनिक जागरण के साथ साझा की खुशी

जासं, हापुड़: प्रधानमंत्री ने रविवार को मन की बात के 102वें एपिसोड में नीम नदी के पुनर्जीवित होने पर इसकी चर्चा की। नदी को पुनर्जीवन में कई लोगों ने कार्य किया, जिसके फलस्वरूप ही आज नीम नदी पुनर्जीवित हो पाई है। दैनिक जागरण ने इस मौके पर उन सभी लोगों से बात कर उनकी खुशी को साझा किया...

❝ प्रधानमंत्री ने जिस तरह से हापुड़ जिले की नीम नदी के उद्गम के पुनर्जीवन को मन की बात में शामिल किया यह हमारे लिए गर्व की बात है। प्रधानमंत्री की बात हम सभी के लिए प्रेरणा है। हम लोग और अधिक ऊर्जा से काम करेंगे। जिन लोगों ने जिस भी रूप में इस पुनीत कार्य में अपने योगदान दिया वह सभी साधुवाद के पात्र हैं। जिस तरह से दैनिक जागरण और नीर फाउंडेशन ने मिलकर काम किया है उसे समाज सदा याद रखेगा। - **स्वतंत्र देव**, जलशक्ति मंत्री उत्तर प्रदेश सरकार

मैंने भी नीम नदी के उद्गम पर जाकर नदी को पुनर्जीवन देने के लिए श्रमदान किया था। आज जब प्रधानमंत्री ने नीम नदी को लेकर चर्चा की तो बहुत अच्छा लगा। दैनिक जागरण और नीर फाउंडेशन का मैं शुक्रिया अदा करती हूं कि उन्होंने मुझे मौका दिया। -**प्रकाशी तोमर**, शूटर दादी

सभी के सहयोग से उस समय नीम नदी को पुनर्जीवित करने का बीड़ा उठाया था। मैंने भी श्रमदान किया था। पश्चिमी उत्तर प्रदेश में सबसे तेजी से भूजल स्तर नीचे जा रहा है। यह चिंता का विषय है। - **सुरेंद्र सिंह**, तत्कालीन डीएम

माननीय प्रधानमंत्री द्वारा मन की बात कार्यक्रम में नीम नदी उद्गम पुनर्जीवन के प्रयास का जिक्र करना हमारा उत्साह बढ़ाने वाला है। अब हमारी जिम्मेदारी और भी अधिक हो गई है। -**रमन कांत त्यागी**, रिवरमैन आफ इंडिया ❞

Thank you for Viewer